MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (Online)
International Peer Reviewed & Referred Journal
ISSN: 2583-9829, Volume: 01, Issue: 02, December 2023

"जिस लाहौर नइ देख्या, ओ जम्याइ नइ"- में मानवीय संवेदना

[1]**फाल्गुनी बी. प्रजापति**, शोधार्थी, (रिसर्च स्कॉलर), हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविध्यालय, पाटण
[2]**डॉ.धनराज बी. चौधरी**, सहायक शोधार्थी, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी, विभाग, श्री बी.पी.बी. आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज उंझा (मेहसाणा)

सारांश :

असगर वजाहत रचित "**जिस लाहौर नइ देख्या, ओ ज्म्याए नइ**" नाटक हिंदी के उन विशिष्ट नाटकों में सम्मिलित हैं, जो लगातार मंचित व प्रशंसित हो रहा हैं | हिंदुस्तान का विभाजन और सरहदों के आर पार का कत्लेआम, दोनों भारत और पाकिस्तान की ऐसी दुखती रगे हैं जो संवेदनशील मन में आज भी टकराती रहती हैं | यह ऐसा नाटक हैं जिसमें भारत - पाकिस्तान के विभाजन की त्रासदी का चित्रण हैं | जिसमें दो अलग मजहब के परिवार की कहानी हैं | यह कहानी सत्य घटना पर आधारित हैं | जिसमें हिंदु औरत के जीवन के बारे में और सामने मुस्लिम परिवार के बीच के रिश्ते को वजाहत जी ने बहुत ही अच्छी तरह से नाटक के जरिए प्रस्तुत किया हैं | इस नाटक में दो अलग मजहब की बात की गई हैं जो इंसानियत के तौर पर खरी उतरी हैं | जिसमे एक ओर धार्मिक विचार वाले लोग तो दूसरी ओर अपने मजहब के खिलाफ कट्टरवादी सोच रखने वाले लोगों की बात की गई हैं | हिंदु औरत जो बूढी हैं, जब उसकी मृत्यु हो जाती हैं तब उसको अग्निदाह देने के लिए एक इस्लामी मौलवी हिंदु धर्म के अनुसार उस बूढी औरत का दाह संस्कार करता हैं | उसमें एक मजहब के प्रति संवेदनशील बताया गया हैं | जो खुद मुसलमान होते हुए भी एक हिन्दुस्तानी औरत का अग्निसंस्कार करता हैं और वह भी हिंदु धर्म के अनुसार जो इस बात को स्पष्ट करता हैं की - आज भी इंसानियत जिन्दा हैं | जिससे यह संदेश मिलता हैं की सिर्फ मजहब के प्रति न सोचकर इंसानियत के प्रति भी सोच रखनी चाहिए |

शब्द कुंजी : संवेदना, इंसानियत, विभाजन, मज़हब, त्रासदी

प्रस्तावना :

"**जिस लाहौर नइ देख्या, ओ जम्याइ नइ**" असगर वजाहत का ख्याति प्राप्त नाटक हैं | वजाहत जी ने इस नाटक को मानवीय स्वरुप प्रदान किया हैं | असगर वजाहत का जन्म 5 जुलाई, 1946 को फतेहपुर, उत्तर प्रदेश भारत में हुआ था | अलीगढ़ मुस्लिम विद्यालय हिंदी में एम.ए तक की पढाई की एवं वही से पीएच.डी की उपाधि भी पायी | जिविकोपार्जन के लिए जामिया, मिलिया, इस्लामिया दिल्ली के लिए विभाग में अध्ययन किया | साठोत्तरी पीढ़ी के महत्वपूर्ण कहानीकार एवं सिद्धहस्त नाटककार और उपन्यासकार हैं | समाज के संवेदनशील व्यक्ति हैं जिन्होंने समाज में रहकर और अनुभव से अपनी रचना को नई गति प्रदान की हैं | वे

धर्म का नितांत विरोध नहीं करते बल्कि यह बताते हैं की समाज विरोधी तत्व कीस तरह धर्म से फायदा उठाते हैं | इस नाटक में पंजाब और लखनऊ की संस्कृतियों का मानवीय स्तर पर समागम अत्यंत संवेदनशील हैं | इस नाटक में एक बूढ़ी अम्मा और लखनऊ से आए मुस्लिम परिवार के बीच की कथावस्तु हैं | जिसमें दो मजहब के बीच पल रहे संवेदना, साम्प्रदायिकता, सामजिकता के बारे में बताया हैं | एक हिंदु परिवार की बूढ़ी अम्मा जो लाहौर में पहले से ही रह रही हैं पर विभाजन की त्रासदी के दौरान सारे लोग अपने - अपने देश हिंदुस्तान से पाकिस्तान और पाकिस्तान से हिंदुस्तान जा रहे हैं | उसमें एक मुस्लिम परिवार को बूढ़ी अम्मा की हवेली एलाट कर दी जाती हैं जो पाकिस्तान में हैं | जहाँ बुढ़िया और मुस्लिम परिवार साथ में रहते हैं | पहले तो दो परिवार में काफी मनमुटाव रहते थे पर धीरे धीरे दो परिवार के बीच संवेदना स्थापित हो जाती हैं | दो अलग अलग समाज, मजहब, मुल्क के दो परिवार के बीच कीस तरह से एक आत्मीय का भाव बढ़ता हैं यह इस नाटक के जरिए समाज को संदेश देने की चेष्टा की गई हैं | विभाजन के बाद हिंदुस्तान से पाकिस्तान आए मुस्लिम परिवार जब रोटी, कपड़ा, मकान के लिए झुझता रहता हैं तब बूढ़ी अम्मा उनकी मदद करती हैं | हर तरह की मदद करके एक मुस्लिम परिवार की मुश्किलें आसन कर के मानवता दिखाती हैं | पर कुछ कट्टरवादी होते हैं जिनको अम्मा कांटे की तरह चुभती रहती हैं | वह किसी भी तरह से अम्मा को रास्ते से हटाना चाहता हैं | पर 'माई' ने सबके दिलो को जित लिया था | उसमें आत्मीयता का भाव छलकता हैं और संवेदना कूट कूट कर भरी हैं | धर्म चाहे कोई भी हो पर अगर मन में किसी के प्रत्ये अच्छी भावना हो तो पराया भी अपना हो जाता हैं | 'माई' में वह इंसानियत, मानवता, नज़र आती हैं |

'हम खुदा भगवान के बनाए हुए इन्सान हैं, यह मजहब की रचना तो हम

इन्सानों ने की हैं | अगर हमें एक समाज में रहना हैं तो ये भेदभाव क्यूँ ?'

नाटक में चित्रित मानवीय संवेदना :

यह नाटक हिंदु - मुस्लिम भाईचारे को बल प्रदान करनेवाला एक प्रासंगिक - मार्मिक एवं अर्थपूर्ण नाटक हैं | इसमें बड़ी कुशलता से सांप्रदायिक एकता की पृष्ठभूमि में प्रगाढ़ - सांस्कृतिक, धार्मिक, संबंधों को रेखांकित किया हैं | घोर साम्प्रदायिकता के उक्त दहशत भरे वातावरण में भी हिंदु औरत की हिफ़ाजत करनेवाला मुसलमान परिवार तथा मरणोपरांत उसके दाह-संस्कार में शरीफ होने को तत्पर मौलवी और कतिपय मुसलमानों का चित्र खींचते वक़्त नाटककार का मकसद यक़ीनन ही इन्सानी रिश्तों के जजबादी ताने-बाने में प्रस्तुर मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करता हैं | अतः हिंदु मुस्लिम एकता और भाईचारे को बल प्रदान करता हैं |

नाटक के शरुआत से लेकर बूढ़ी अम्मा मुस्लिम परिवार की किसी भी तरह सहायता करती रहती हैं | नाटककार ने 'रतन की माँ' की रचना करके उसमें तो तत्व डाले हैं - सहिष्णुता और सेवा | जब चूल्हा जलाने के लिए हमीदा बेगम को लकड़ियों और कोयले की जरुरत पड़ती हैं तब बूढ़ी अम्मा कहती हैं -

"रतन की माँ : बेटी, बरामदे दे खब्बे हाथ दी तरफ वाली छोटी कोठडी च लकड़ा परी पड़्यां

ने..... काड़ ले....."(1)

बूढी अम्मा की इस मदद से दोनों माँ और बेटी आवाक रह जाते हैं | जिसे घर से निकाल ने की बात कर रहे थे वही अम्मा उन लोगों की मदद करके इंसानियत दिखाती हैं |

माई के स्नेह की शुरुआत घर में रात को हुए किसीको 'दर्द' की आवाज से लेकर होती हैं | सुबह जब तन्नो आवाज लगाती हैं -

"रतन की माँ : तेरी माँ दी तबीअत कैसी हैं |..... कल रात किस दे कान

विच दर्द हो रिआ सी |

तन्नो : हां.. अम्मा के ही कान में था |

रतन की माँ : तां फिर मेरे तों दवा लै लेंदी... ए छोटे - मोटे इलाज़ टे मैं खुद कर लैंदी

हां |"(2)

जब हमीदा बेगम अम्मा को आदाब बुआ कहती हैं, तब अम्मा उसे कहती हैं की -

"रतन की माँ : बेटी... तू मेरी पुत्तर दे बराबर हैं.... माँ जी बुलाया कर मैंनू |"(3)

इससे साफ़ साफ़ पता चलता हैं की माई के अंदर कितनी ममता भरी हुई हैं | जिससे कोई रिश्ता - नाता नहीं हैं फिर भी अम्मा "माँ" की तरह सबका ख्याल रखती हैं | यहाँ पर नए संबंध कायम होते दिखाई दे रहे हैं, पुराने संबंधों को भूलकर नए संबंध की स्थापना होती दिखाई गई हैं | यहाँ मुस्लिम परिवार का देशान्तर हुआ हैं और एक तरफ माई के हृदय का नया ट्रांसप्लांट हुआ हैं | अम्मा लकड़ी से लेकर दवाई तक की मदद करती हैं | यहाँ तक वह सारा दिन व्यस्त रहती हैं, कभी रवि नदी में नहा ने चली जाती हैं, किसी को अस्पताल ले जा रही हैं तो कभी आचार डालना सिखा रही हैं | इतना सबकुछ मुसलमान लोगों के साथ एक परिवार की तरह रहकर करती हैं, जिसकी वजह से मोहल्ले के छोटे-बड़े सबकी जुबान पर माई का नाम रहता हैं |

माई अपने सहज स्वभाव के कारण लोगों की मदद करती हैं | माई के अंदर किसी भी प्रकार का पूर्वग्रह नहीं दिखाई देता | उसके अंदर लाहौर की संस्कृति झलकती हैं जो मानवता, उदारता, और भाईचारे पर आधारित हैं | अपने सहज गुण के कारण वह खुदको मदद करने से रोक नहीं पाती हैं | माई की तरह मुस्लिम परिवार में एक सदस्या हैं - हमीदा बेगम | जो माई की तरह संवेदनशील और सुसंकृत हैं | सिकंदर मिर्ज़ा के परिवार को हवेली एलाट होने के बाद भी उस हवेली का मालिक माई को ही मानता हैं | हमीदा बेगम की

सहजता और संवेदनशीलता माई को प्रभावित करती हैं | आर्थिक विषमता में भी माई का मुस्लिम परिवार के प्रति संवेदनशील होना इंसानियत की प्रतीति कराता हैं | 'माई' और 'हमीदा बेगम' इन दोनों पात्रों में हमे एक दुसरे के प्रति मानवता देखने को मिलती हैं | ये दोनों अलग-अलग मज़हब के होने के बावजूद भी गंगा-जमुना की सुसंस्कृति की तरह आपस में प्यार से रहते हैं | इस नाटक के जरिए इंसानियत को ही सबसे बड़ा गुण बताया गया हैं | इस नाटक में हिंदु तथा मुसलमानों के विस्थापन की पीड़ा को मानवीय संवेदना के साथ अभिव्यक्त किया गया हैं | यह नाटक वर्तमान विचारधारा पर चोट करता हैं | मानव की नींव मानव की विचारधारा पर निर्भर हैं | माई जब दिवाली का त्यौहार मनाती हैं तो सबको मिठाई बाँटती हैं और मुस्लिम परिवार जब ईद मनाता हैं तब वह भी सबको मिठाई बाँटता हैं | सवाल यहाँ पे ख़त्म नहीं होता इससे आपसी सोच नहीं बदलती | धर्म की इस सोच को बदलने के लिए एक दुसरे के नजदीक आना जरुरी हैं | अगर इस सोच को दूर करके देखेंगे तो हमें लगेगा कि इंसानियत से बड़ा कोई धर्म नहीं हैं, इंसानियत से बड़ा कोई कर्म नहीं हैं |

इस नाटक की एक छोटी सी बच्ची 'तन्नो' के माध्यम से नाटककार ने एकता एवं मानवता का भी संदेश दिया हैं | जिसके एक कथन ने लोगों के दिलों-दिमाग को झकझोर कर दिया हैं | छोटी सी बच्ची 'तन्नो' अपनी अम्मा से कहती हैं -

"तन्नो : अम्मा अगर हम लोग और माई एक ही घर में रह सकते हैं तो हिंदुस्तान में
हिंदु और मुसलमान क्यों नहीं रह सकते थे ?"(4)

एक छोटी बच्ची द्वारा कहा गया यह कथन मानवता व एकता का संदेश देता हैं | जब एक छोटी बच्ची इतना समझ सकती हैं तो हम क्यूँ नहीं ? भिन्न मज़हब, भिन्न त्यौहार, यहाँ तक की भाषा भी भिन्न उर्दू और पंजाबी | दोनों में से कोई भी एक दुसरे की भाषा को समझ नहीं सकता फिर भी उन लोगों के बीच एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं लगाव हैं | उनकी भाषा को संवेदना का माध्यम बनाकर एक-दूसरे के सुख-दुख को बाँटते रहते हैं |

इस नाटक का मौलवी इस्लाम के वास्तविक रूप को उदार, सहिष्णु, औए मानवीय बनता हैं | मौलवी कहाता हैं की -

"मौलाना : भई हसीद शरीफ हैं की तुम दूसरों के खुदाओं को बुरा न कहों, ताकि वह
तुम्हारे खुदा को बुरा न कहे, तुम दूसरों के मज़हब को बुरा न कहों, ताकि वह
तुम्हारे मज़हब को बुरा न कहें |..... पुत्तर इस्लाम ने बहुत हक दिए
हैं, जो तमाम इन्सानों के लिए हैं | उसमें मज़हब, रंग, नस्ल और जान का

कोई फर्क नहीं किया गया |"(5)

जब सिकंदर मिर्ज़ा को हवेली खाली करने के लिए बार-बार पहलवान याकूब खां की ओर से धमकियाँ मिलती हैं तो माई खुद लाहौर छोड़कर दिल्ली जाने के लिए निकल पड़ती हैं, पर वहाँ नासिर और हिदायत आते हैं और माई को जाने से रोकते हैं | नासिर कहेता हैं की -

"नासिर : तुम अगर यहाँ न रही तो हम सब नंगे हो जाएँगे माई..... नंगा आदमी नंगा होता हैं, न हिंदु होता हैं और न मुसलमान....|"(6)

इस कथन से यह ज्ञात होता हैं की इन्सान कपड़ों से ही हिंदु और मुसलमान हैं बाकी तो वह सिर्फ इन्सान ही हैं | माई को यूँ जाने से रोकना यानी मुसलमान लोगों के दिल में माई के प्रति प्रेम व लगाव दिखाई देता हैं |

नाटक के अंत में जब माई की मृत्यु हो जाती हैं, तो उसकी अंतिमविधि के लिए सब के मन में प्रश्न खड़े हो उठते हैं की माई की अन्तिम संस्कार कैसे करे ? सब अपनी अपनी राय देते हैं | कोई अलग अलग सुझाव देते हैं, तो कोई कट्टरवादी शव को दफ़नाने की बात करता हैं | तब वहाँ मौलवी आता हैं और मज़हब को लेकर समझाता हैं -

"मौलाना : पुत्तर इस्लाम खुदगर्जी नहीं सिखाता | इस्लाम दुसरे के मज़हब और ज़ज्बात का एहतेराम करना सिखाता हैं - अगर तुम सच्चे मुसलमान हो तो ये करके दिखाओं ?"(7)

जब माई के शव को हिंदु रित-रिवाज के साथ उसकी अंतिम विधि की तयारी की जाती हैं तब माई के जनाजे को उठाकर सब मुसलमान 'राम नाम सत' बोलकर उनकी अंतिम क्रिया करते हैं |

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं की असगर वजाहत जी उच्च कोटि के रचनाकार हैं | जिन्होंने मानव संवेदना के हार में गूंथे पुष्पों की अपनी स्वकीय जीवनानुभूति का रस दिया हैं | अलग मज़हबों के होते हुए भी एक ही हवेली में एक ही छत के नीचे रहकर अपने धर्म, रित-रिवाज, त्यौहार मनाना भी समाज के लिए मानवता एवं एकता का संदेश इस नाटक के माध्यम से हमें मिलता हैं |

संदर्भ सूचि

1. **जिस** लाहौर नइ देख्या - पृ.सं -11, असगर वजाहत https://www.abhivyakti-hindi.org
2. वही, पृ.सं - 26

3. वही, पृ.सं - 26
4. वही, पृ.सं - 47
5. वही, पृ.सं - 53
6. वही, पृ.सं - 59
7. वही, पृ.सं -68

Certificate No.:010212202320

multidisciplinary COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (on-line)
International Peer Reviewed and Refereed Journal

Certification of Publication

The Board of Multidisciplinary Cosmopolitan Journal of Research (MUCOJOR) is hereby awarding this certificate to

फाल्गुनी बी. प्रजापति

In recognition of the publication of the paper entitled

“जिस लाहौर नइ देख्या, ओ जम्याइ नइ”- में मानवीय संवेदना

Published in Volume 01, Issue 02, December 2023.

EDITOR IN CHIEF

Certificate No.:010212202320

multidisciplinary COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (on-line)
International Peer Reviewed and Refereed Journal

Certification of Publication

The Board of Multidisciplinary Cosmopolitan Journal of Research (MUCOJOR) is hereby awarding this certificate to

डॉ.धनराज बी. चौधरी

In recognition of the publication of the paper entitled

“जिस लाहौर नइ देख्या, ओ जम्याइ नइ”- में मानवीय संवेदना

Published in Volume 01, Issue 02, December 2023.

EDITOR IN CHIEF